बुद्धवर्ष २५४५, वैशाख पूर्णिमा, ७ मई, २००१ वर्ष ३० अंक ११

धम्मवाणी

सो अत्थवा सो धम्मट्ठो, सो दक्खो सो विचक्खणो।
करेय्य रममानोपि, किच्चं धम्मत्थसंहितं॥

थेरगाथा - ७४०

वह व्यक्ति अर्थवान है (उसने सही स्वार्थ सिद्ध कर लिया है), वह धर्मिष्ठ है, वह दक्ष (कुशल) है; वह विचक्षण (चतुर) है; संसार में रमता हुआ भी वह धर्मयुक्त और अर्थयुक्त काम करता है।

डॉ. विट्ठलदास मोदी

भदंत आनंद कौसल्यायनजी से मेरा संपर्क लगभग आधी शताब्दी से रहा है। वे जब-जब रंगून आते थे अधिकतर गोयन्का निवास के अतिथिकक्ष में ही ठहरते थे। वे इतने विनोदप्रिय और बहुश्रुत थे कि उनका सान्निध्य अत्यंत सुखद और ज्ञानवर्धक लगता था। वे 'राष्ट्रभाषा प्रचार सभा', वर्धा के वर्षों प्रधानमंत्री रहे और 'दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा' तथा 'प्रयाग के हिंदी साहित्य सम्मेलन' से भी उनका घनिष्ट संबंध रहा। अतः बरमा में हिंदी प्रशिक्षण के कार्यों में हमें उनका अमूल्य सहयोग मिला। इस कारण भी उनसे घनिष्टता बढ़ती गयी। १९५५ में भगवान बुद्ध की कल्याणी विपश्यना विद्या के संपर्क में आने के पश्चात तो उनसे और अधिक आत्मीयता बढ़ी।

आनंदजी प्राकृतिक चिकित्सा के परम प्रशंसक थे। बरमा रहते हुए मैंने पहले कभी इस चिकित्सा का नाम तक नहीं सुना था। सबसे पहले उन्होंने ही इस विद्या के बारे में जानकारी दी। इसकी चर्चा करते हुए वे बार-बार डॉ. विट्ठलदासजी मोदी का जिक्र किया करते थे। उनका मोदीजी से घनिष्ट संबंध था। उन्होंने बताया कि मोदीजी गांधीजी से बहुत प्रभावित हैं। गांधीजी प्राकृतिक चिकित्सा में केवल विश्वास ही नहीं करते थे वरन अपने तथा औरों के उपचार के लिए इसका प्रयोग भी करते थे। गांधीजी द्वारा प्राकृतिक चिकित्सा पर लिखी एक पुस्तक आनंदजी ने मुझे दी थी, जिसे हमने बरमी में अनुवाद कराकर रंगून के गांधी स्मारक ट्रस्ट की ओर से प्रकाशित करवायी। मेरे मित्र श्री यशपाल जैन ने भी प्राकृतिक चिकित्सा और मोदीजी के प्रति प्रशंसात्मक शब्द कहे थे। अतः मोदीजी के प्रति मेरे मन में श्रद्धा का भाव था।

१९६९ में विपश्यना विद्या लेकर मैं भारत आया और स्थान-स्थान पर विपश्यना के शिविर लगाते हुए धर्मचारिका करने लगा। १९७२ में वाराणसी मलदहिया के बरमी विहार में जब शिविर लगाने गया तो शिविरार्थियों की सूची में विट्ठलदास मोदी का नाम देखा। मैंने जब यह जाना कि यह गोरखपुर के आरोग्य मंदिर वाले मोदीजी ही हैं तो मेरा मानस प्रसन्नता से भर उठा। मैं मन-ही-मन कल्याणी विपश्यना के प्रति श्रद्धानत हुआ जिसके कारण मुझे मोदीजी जैसे लब्धप्रतिष्ठ समाजसेवी की धर्मसेवा करने का अवसर मिल रहा था।

मैंने उन्हें अत्यंत मैत्री चित्त से यह अध्यात्म विद्या सिखायी और उन्होंने भी अत्यंत मनोयोग से काम किया। परिणाम अच्छे आने ही थे। मैंने देखा कि शिविर-समापन पर उनके चेहरे पर संतुष्टि के भाव स्पष्ट थे।

दस दिवस के स्वानुभव से उन्हें यह विद्या वैज्ञानिक लगी, फलप्रदायिनी लगी, निर्दोष लगी। परंतु सिखाने वाले की वास्तविक नीयत क्या है? इसे वे जांच लेना चाहते थे। धर्म के नाम पर अनेक गुरुओं द्वारा चलाई जा रही ठगविद्याओं से वे बखूबी परिचित थे। अतः मुझसे प्रश्न किया कि जब मैं लोगों से यह विद्या सिखाने की कोई फीस नहीं लेता तो इसमें मेरा अन्य क्या स्वार्थ है? मुझे इससे क्या मिलता है? मैंने कहा कि इससे मेरी पुण्यपारमी बढ़ती है और मैं अपने गुरु-ऋण से मुक्त होता हूं। मैं नहीं कह सकता कि मेरे इस उत्तर से वे कितने आश्वस्त हुए। परंतु जब मैंने कहा कि शिविर में अनेक लोग मुरझाए-मुरझाए चेहरे लेकर आते हैं। अधिकांश शिविरार्थियों का मानस किसी न किसी विकार से विकृत रहता है। परिणामतः उनके हृदय में व्याकुलता छायी रहती है। परंतु दसवें दिन शिविर समापन पर जब उनका खिला हुआ चेहरा देखता हूं तो मन बड़ा प्रसन्न होता है। शिविर के बाद भी उनमें से अनेकों के पत्र आते हैं कि अब उनका मन हल्का हो गया है, स्वस्थ हो गया है, दैनंदिन समस्याओं का सामना करने और उनके समाधान ढूंढने में सक्षम हो गया है, अब वे तन और मन से अधिक स्वस्थ हो गये हैं तो मेरी प्रसन्नता अधिक बढ़ जाती है। जिस विद्या ने मुझे मेरे शारीरिक, मानसिक और अन्यान्य सांसारिक दुःखों से मुक्त किया, उसे औरों को बांट कर उन्हें भी दुःखमुक्त हुआ देखता हूं तो स्वभावतः मेरा हृदय प्रसन्नता से भर उठता है। इससे बड़ी स्वार्थसिद्धि और क्या होगी।

मेरा यह कथन मोदीजी को सहज स्वीकार्य हुआ। वे स्वयं एक

कुशल चिकित्सक थे। नित्य दुखियारे रोगियों का सामना करते थे। अपनी चिकित्सा द्वारा उन्हें रोग-मुक्त हुआ देख कर उनका मन भी प्रसन्नता से भर उठता था। अतः उन्हें मेरी यह प्रसन्नता स्वाभाविक लगी।

मोदीजी प्राकृतिक चिकित्सा के माहिर थे। उन्होंने पहले शिविर में ही स्वानुभव द्वारा भलीभांति जान लिया कि रोगी को मनोविकारजन्य रोगों से मुक्त करने की यह प्राकृतिक चिकित्सा है। मन में विकार जागते हैं तो शरीर में विष पैदा होता है। उसका संवर्धन और संचयन होता है और शरीर रोगी हो जाता है। भगवान बुद्ध महाभिषक याने महान चिकित्सक कहलाते थे। उन्होंने विपश्यना के नैसर्गिक उपचार द्वारा मन को स्वच्छ, स्वस्थ और सबल बना कर दुःखविमुक्त करने की यह विद्या खोज निकाली और इसके प्रशिक्षण द्वारा अनेकों का कल्याण किया।मोदीजी ने अपने अनुभव से यह भी प्रत्यक्ष जान लिया कि जैसे लंबे उपवास से शरीर में एकत्र हुआ हानिकारक विष उभर कर बाहर निकलता है वैसे ही दस दिन की विपश्यना में भी उसका नैसर्गिक उभार और निष्कासन होता है।

उन्होंने देखा कि रोगी शरीर की प्राकृतिक चिकित्सा की भांति रोगी मानस के निसर्गोपचार की यह विद्या भी सार्वजनीन है, सार्वकालिक है और सार्वभौमिक है। जिस किसी व्यक्ति का मानस जब कभी, जहां कहीं, विकारों से विकृत हो उठता है, तब वह दुःखी हो उठता है। विकारों से छुटकारा पाते ही वह स्वस्थ सुखी हो जाता है। अतः यह विद्या सब के लिए समान रूप से उपयोगी है। उन्हें यह देख कर भी संतोष हुआ कि यह विद्या साधक को धर्म के नाम पर किसी संप्रदाय के बाड़े में नहीं बांधती, निरर्थक कर्मकांडों में नहीं उलझाती, निःसार दार्शनिक मान्यताओं की मरीचिकाओं में नहीं भरमाती।

पहले ही शिविर में स्वानुभूतियों के बल पर इतना कुछ समझ लेने पर मोदीजी ने विपश्यना को अपना लिया और विपश्यना ने मोदीजी को। दैनिक अभ्यास के अतिरिक्त वे हर वर्ष विपश्यना के शिविर में सम्मिलित होने लगे। इससे अत्यंत लाभान्वित हुए। अतः औरों को भी प्रेरित करने लगे। उन्होंने विपश्यना पर अनेक लेख लिखे। विपश्यना संबंधी कुछ एक पुस्तकें अपने विक्रय विभाग में रखी। इससे उत्साहित होकर अनेक लोग विपश्यना शिविरों में आए। आज के भारत में जितने भी प्राकृतिक चिकित्सालय हैं, वहां के चिकित्सकों में से लगभग सभी मोदीजी द्वारा प्रशिक्षित हैं। अतः मोदीजी से प्रभावित होकर उनमें से अधिकांश विपश्यना के शिविरों में भाग लेकर लाभान्वित हुए। इस प्रकार वे विपश्यना के प्रचार-प्रसार के लिए एक समर्थ सहयोगी सिद्ध हुए।

कालांतर में उन्होंने आरोग्य मंदिर के रोगियों को स्वयं आनापान सिखाना आरंभ किया और इसके अच्छे परिणाम आने लगे। आगे चल कर जब विपश्यना के दीर्घ शिविरों का भी अनुभव प्राप्त कर लिया तब १९८४ में उन्होंने सहायक आचार्य का, १९९४ में वरिष्ठ सहायक आचार्य का और अंततः १९९७ में पूर्ण आचार्य पद का उत्तरदायित्व संभाला। वे साधकों के लिए दस-दस दिवस के शिविर लगाने लगे। उन्होंने कुशीनगर के बरमी बुद्ध विहार में अनेक शिविर लगाए।

इस बीच सारे विश्व में और भारत में भी स्थान-स्थान पर अनेक विपश्यना केंद्र खुल गये। उन तपोभूमियों में विपश्यना के अतिरिक्त अन्य कोई प्रवृत्ति नहीं होती। अतः विभिन्न अस्थाई स्थानों में लगे शिविरों की अपेक्षा इन तपःपूत विपश्यना केंद्रों में साधकों को अधिक लाभ मिलता है। इस सच्चाई को उन्होंने प्रत्यक्ष देखा। वे यह जान गये थे कि प्राकृतिक चिकित्सालयों में आनापान भले सिखाया जा सके, परंतु विपश्यना के लिए तपोभूमि का शांत एकांत वातावरण आवश्यक है। वे यह चाहते थे कि कुछ एक विशिष्ट रोगियों को प्राकृतिक चिकित्सा के बाद विपश्यना की आध्यात्मिक चिकित्सा भी तुरंत करायी जाय ताकि मानसिक स्तर पर भी वे स्वस्थ रहें और भविष्य में मनोमूलक रोगों से बचे रहें। इस निमित्त वे इगतपुरी में धम्मगिरि के समीप प्राकृतिक चिकित्सालय स्थापित करने की सोच रहे थे। परंतु आवश्यक सुविधाओं के अभाव में यह सहज संभव नहीं था। अतः उन्हें दूसरा विकल्प यह सूझा कि एक विपश्यना केंद्र कुशीनगर की पावन भूमि पर स्थापित किया जाय, जिससे कि गोरखपुर के आरोग्य मंदिर की चिकित्सा से लाभान्वित हुए रोगियों को मानसिक स्वस्थता के लिए इस तपोवन का लाभ मिले। उनके अतिरिक्त इस केंद्र द्वारा अन्यान्य अनेक स्थानीय तथा देश-विदेश से आए हुए यात्री भी विपश्यना से लाभान्वित हो सकेंगे।

मोदीजी के इस बहुजन हितसुखकारी धर्मस्वप्न को पूरा करने के लिए कुशीनगर के बरमी विहार के अध्यक्ष अग्रमहापंडित भदन्त ज्ञानेश्वरजी ने विहार की भूमि का एक भाग विपश्यना ट्रस्ट को प्रदान किया। कुशीनगर के अन्य विपश्यी भिक्षु साधकों ने भी सहयोग दिया जिससे कि विपश्यना केंद्र स्थापन का कार्य शीघ्र संपन्न हो।

म्यंमा (बरमा) में भी अनेक विपश्यी भिक्षुओं ने भी इसी कुशल चेतना से विपश्यना ट्रस्ट को भूमियां दान दीं हैं। रंगून के प्रधान विपश्यना केंद्र 'धम्मज्योति' के लिए वहां के विहार के प्रधान भिक्षु ऊ सोभित ने अपने निवास के लिए एक छोटा-सा टुकड़ा अपने पास रखकर, शेष लगभग बारह एकड़ धर्मभूमि विपश्यना ट्रस्ट को दान दी है। मोगोक के 'धम्म रतन' विपश्यना केंद्र के लिए वहां के प्रमुख भिक्षु ने विहार में से आवश्यक भूमि ट्रस्ट को प्रदान की है। मांडले में पूज्य भमो सयाडो ने अपने विहार के एक भाग की भूमि ट्रस्ट को दान में दी जिससे कि 'धम्म मण्डप' विपश्यना केंद्र का निर्माण हुआ। मांडले में ही येटगुं सयाडो ने अपने विहार का ८.६५ एकड़ का भूखंड ट्रस्ट को दान दिया है जिस पर 'धम्म मण्डल' विपश्यना केंद्र का निर्माण होगा। इसके अतिरिक्त लोइको के पूज्य सयाडो ने अपने विहार का एक बहुत बड़ा भाग विपश्यना ट्रस्ट को दान देने का प्रस्ताव किया है। परंतु जब तक आवश्यक संख्या में विपश्यना के आचार्य प्रशिक्षित न हो जायँ, तब तक इसे स्वीकार नहीं किया गया। इन सभी भिक्षुओं ने देखा कि उनके विहार का कोई भूभाग विपश्यना के लिए दान दिया जाय तो इससे बढ़ कर उसका सदुपयोग और क्या होगा! इन सभी पूजनीय भिक्षुओं ने स्वयं विपश्यना शिविरों में सम्मिलित होकर विपश्यना का लाभ उठाया है। अतः वे भगवान बुद्ध की इस कल्याणकारी विद्या का बहुजन हित-सुख के लिए प्रचार प्रसार चाहते हैं। इसी धर्मचेतना से कुशीनगर के भिक्षुओं ने 'धम्मविमुत्ति' विपश्यना केंद्र के लिए एक भूखंड विपश्यना ट्रस्ट को दान दिया है। इन भिक्षुओं ने भी स्वयं विपश्यना के शिविर में भाग लेकर देख लिया है कि वस्तुतः यह विद्या अनुपम, आशुफलदायिनी है और भगवान बुद्ध की वास्तविक प्रयोगात्मक शिक्षा है। इसका प्रसार देख कर भिक्षुओं के मन प्रमोद से भर उठते हैं।

इस तीर्थ स्थान पर शीघ्र ही विपश्यना केंद्र का निर्माण हो,

विट्ठलदास मोदीजी का धर्म संकल्प पूरा हो, जिन उदारचेता भिक्षुओं ने भूमिदान दिया है और जो लोग इसके निर्माण में भाग लेंगे, उन सब का पुण्यवर्धन हो! मंगल हो! कल्याण हो!

कल्याणमित्र,

सत्यनारायण गोयन्का

मंगल मृत्यु

श्री कानजीभाई बचपन से ही बहुत आध्यात्मिक वृत्तिवाले थे। उन्होंने किसी प्रकार की सांप्रदायिक गतिविधियों या क्रियाकांडोंमें कभीभी भाग नहीं लिया। कोरी मान्यताओं में कभी उलझे नहीं और सत्य की सतत खोज करते रहे। अनेक प्रकार के व्याख्यानों, शिविरों और प्रयोगों का अनुभव किया परंतु सार न मिलने पर उनसे सहजरूप से बाहर निकल आए।

१९६९ में श्री कानजीभाई ने कहीं से सुना कि बरमा में विपश्यना नाम की साधना है जिससे तीन दिन में ही समाधि मिलती है। उन्हें आश्चर्य हुआ कि ऐसी कौन-सी विद्या है जिससे महज तीन दिन में समाधि सध जाती है, जबकि यहां भारत में पूरा जीवन बीत जाने पर भी ऐसा नहीं हो पाता। उन्होंने कहीं से पता लगाकर सयाजी ऊ बा खिन को पत्र लिखा कि मैं भी विपश्यना करना चाहता हूं। उन्होंने जवाब दिया कि राजनयिक कारणोंसे यहां आकर साधना करना इतना सहज नहीं है और न ही मैं स्वयं भारत आकर सिखा सकता हूं। परंतु इस विद्या को सिखाने के लिए श्री सत्यनारायण गोयन्का को भारत भेजा है। वे वहां शिविर लगा रहे हैं। उन्हीं से संपर्क करो।

१९६९ के अंत में मुंबई के एक शिविर में वे श्री गोयन्काजीसे मिलने आए। साथ में उनकी पत्नी भी थी। श्री गोयन्काजी ने उनसे पूछा, "बेटी तुम भी शिविर में बैठोगी?" उन्होंने कहा, "मैं तो अभी यह देखने आयी हूं कि कहीं इनको साधु-संन्यासी तो नहीं बना देंगे?" पूज्य गुरुदेव ने हँस कर कहा, "मैं स्वयं गृहस्थ हूं तो भला दूसरे को संन्यासी कैसे बना सकता हूं!" यों आश्वस्त होकर श्री कानजीभाई को छोड़ वे घर लौट आयीं और उन्होंने अपना शिविर पूरा किया। उन्हें वह शिविर बहुत अच्छा लगा। जिसकी खोज थी, वह विद्या उन्हें मिल चुकी थी। तब से वे सारे प्रयोग छोड़ कर विपश्यना में ही लग गये और बहुत गहराई से साधना करने लगे। उनके अनेक साथी, मित्र, सगे-संबंधी विपश्यना से लाभान्वित हुए। साधना उन्हें इतनी अच्छी लगी कि जब भी पूज्य गुरुजी मुंबई में होते तो यथासंभव उनके घर जाकर उनके साथ सामूहिक साधना जरूर करते।

इगतपुरी में विपश्यना केंद्र बना तो वे उसके निर्माण से लेकर सभी गतिविधियों में सक्रिय रहने लगे।

कानजीभाई एक अच्छे अक्यूप्रेसर थेरापिस्ट थे और सेवाभाव से ही जीवन भर इस विद्या द्वारा अनेक लोगों को स्वस्थ करने का अच्छा पुण्यलाभ कमाया। विपश्यना से उनकी स्वयं की अनेक बीमारियां जैसे डायबिटीज, गैस आदि बिना औषधि के ठीक हुईं। जब उन्हें हृदयाघात की बीमारी हुई तब वे समतापूर्वक उसे सहजभाव से झेल पाए और तत्पश्चात बाईपास का ऑपरेशन हुआ। उसके बाद नियमित साधना करते रहे और सेवा का काम भी करते रहे। ऐसे ही किसी काम से वे अपनी पत्नी के साथ मुंबई से चेन्नई जा रहे थे। विमानपत्तन पर 'चेक-इन' हो जाने के बाद व्हीलचेयर पर अंदर जा रहे थे कि इतने में उन्हें कुछ दर्द-सा अनुभव हुआ। उनकी पत्नी को लगा कि उन्हें कुछ कठिनाई है। अतः झुक कर पूछा तो इशारे से मना कर दिया और स्वयं साधना में लग गये। थोड़ी देर बाद पत्नी ने पुनः बात करने का प्रयत्न किया तो कोई जवाब नहीं मिला। पत्नी ने परिचारिका को कहकर डॉक्टर बुलाने के लिए कहा। जब तक डॉक्टर्स कुछ कर पाते, उनका सिर पत्नी की गोद में लुढ़क गया था। डॉक्टरों के पूछने पर केवल इतना बताया कि छाती में दर्द है। डॉक्टरों ने गैस लगाकर तात्कालिक उपचार आरंभ किया। एयरलाइन की एम्बुलेंस में डालकर अस्पताल ले जाने की व्यवस्था हुई। पर तब तक वे शांत हो चुके थे। मरणांतक पीड़ा के अंतिम क्षण उन्होंने किसी को पीड़ा का अहसास तक नहीं होने दिया। ऐसे स्वस्थ मन, सजग और शांतचित्त से साधना करते हुए बैठे-बैठे सद्गति पाई। ऐसी मृत्यु बहुत बड़े पुण्य से ही प्राप्त होती है। उनका मंगल हुआ!

*****

पूना में शिक्षकों-अध्यापकों के लिए विशेष कार्यशालाएं

धम्मपुण्ण, पूना के विपश्यना केंद्र पर आगामी १८ मई से २ जून एवं ८ से २३ जून तक दो पंद्रह दिवसीय कार्यशालाओं का आयोजन निश्चित हुआ है जो कि विशेष रूप से स्कूल शिक्षकों, लेक्चरर्स और प्रोफेसर्स के लिए "शिक्षा में नैतिक मूल्यों का महत्त्व" विषय पर परिचर्चा एवं "विपश्यना ध्यान का प्रत्यक्ष अनुभव" विषयों पर आधारित होगी। उपरोक्त कार्यशालाओं में एक दस दिवसीय विपश्यना शिविर और शिविर के पूर्व व पश्चात चर्चासत्र होंगे। कार्यशालाएं प्रातः १० बजे से आरंभ होंगी।

पुराने विपश्यी साधक जो कि शिक्षा के क्षेत्र से संबंधित हैं, वे इसका लाभ अवश्य लें और अपने मित्रों व परिचितों को भी प्रोत्साहित करें। इस बारे में अधिक जानकारी के लिए 'धम्मपुण्ण' के पुणे कार्यालय से संपर्क करें।

आनापान शिविर कार्यशालाएं

बच्चों के आनापान शिविरों में सेवा देने वाले बालशिविर शिक्षक, धम्मसेवक तथा सेवा देने के इच्छुक साधकों के लिए निम्न स्थानों पर कार्यशालाओं का आयोजन हो रहा है : –

अहमदाबाद – घासीराम चौधरी भवन, १० व ११ मई

धम्मकोट, राजकोट – १२ व १३ मई

धम्मसिन्धु, बाड़ा – १५ व १६ मई

धम्मगिरि, इगतपुरी – १ से ३ जून

लाजिक स्टेट वन, नई दिल्ली – ९ व १० जून

धम्मथली, जयपुर – ६ व ७ जुलाई

वाराणसी – २१ व २२ जुलाई

धम्मगङ्गा, कलकत्ता – २८ व २९ जुलाई.

संपर्क : (कृपया शिविर-कार्यक्रम के संपर्क देखें।)

पंजाब की जेल में पहला विपश्यना शिविर

संगरूर की जेल में पहला विपश्यना शिविर १४ से २५ मार्च, २००१ को सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। शिविर के पूर्व संगरूर जेल-सुपरिंटेंडेंट ने धम्मधज विपश्यना केंद्र पर अपना दस दिवसीय शिविर पूरा किया। जेल की एक चक्की (कोठरी) में एक ही साधक रखने की नीयत से सुपरिंटेंडेंट के निर्देश पर केवल १६ कैदियों को

सम्मिलित किया गया। शिविर समापन पर आई.जी. जेल, पंजाब, डी.सी. तथा अन्य अधिकारी भी उपस्थित थे। परिणाम देख कर सब का आग्रह हुआ कि अन्य जेलों में भी ऐसे शिविर लगाने के लिए पंजाब सरकार को सुझाव देंगे। पूज्य गुरुजी के प्रवचन सुन कर महिला कैदियों ने भी शिविर में भाग लेने की इच्छा व्यक्त की। संयोग होगा तो भविष्य में उन्हें भी धर्मलाभ मिल सकता है।

भिक्षु प्रशिक्षण कार्यशाला

पूज्य गुरुदेव के तत्वावधान में धम्मगिरि पर ६ से १४ फरवरी तक 'भिक्षु प्रशिक्षण कार्यशाला' का आयोजन हुआ, जिसमें पंद्रह वरिष्ठ भिक्षुओं ने भाग लिया। इनमें इन्हें धर्म के गंभीर पहलुओं को समझाने के अतिरिक्त ग्रामीण क्षेत्रों में विपश्यना का प्रचार-प्रसार करने की प्रणाली से भी अवगत कराया गया। इन्हें पालि भाषा का प्रारंभिक ज्ञान कराने के साथ भगवान बुद्ध द्वारा प्रतिपादित भिक्षु नियमों की जानकारी विशेषरूप से दिलायी गयी।

कार्यशाला के समापन पर भिक्षुओं ने यह आयोजन अत्यंत लाभप्रद बतलाते हुए भविष्य में भी ऐसी कार्यशालाएं लंबी अवधि के लिए आयोजित किये जाने की मांग की।

नए उत्तरदायित्व :

आचार्य

1-2) Dr Khin Maung Aye & Dr (Mrs) Kyi Sein, *To serve Myanmar*

3-4) Mr Bruce & Mrs Maureen Stewart, *Spread of Dhamma*

वरिष्ठ सहायक आचार्य

1. Mr M.D. Parera, SriLanka
2. Ms S. Rukmini, Kodagoda

नव नियुक्तियांः सहायक आचार्य

Mr Ittiporn & Mrs Monta Thong-innate, *Thailand*

Mr Robert Cannon, *USA*

बालशिविर शिक्षक

१. सुश्री अल्का मरवाहा, गुड़गांव

२. श्रीमती शोभा छुट्टानी, नई दिल्ली

3. Mrs Wantanee Pintakananda and

4. Ms Nate Thong-innate, *Thailand*

दोहे धर्म के

अवसर आया धर्म का, मत प्रमाद में खोय।
अब श्रद्धा श्रम लगन से, सतत ध्यान-रत होय॥

मेरा वाद अकाट्य है, मत मिथ्या यूं मान।
मत विवाद में उलझ रे, स्वयं सत्य पहचान॥

मुख्य बात अभिमान तज, बनें विनम्र विनीत।
अहंकार जब तक रहे, होय न चित्त पुनीत॥

कर लें दूर कषाय सब, यही जनम का ध्येय।
दुर्लभ जीवन मनुज का, साधें अनुपम श्रेय॥

मन के मैल उतार ले, जो चाहे सुख चैन।
मैले मन दुखिया रहे, बौद्ध होय या जैन॥

प्रज्ञा जल से रगड़ कर, मन के मैल उतार।
अंतर्मल छूटे बिना, थोथे सभी सुधार॥

मेसर्स मोतीलाल बनारसीदास

• महालक्ष्मी मंदिर लेन, ८ महालक्ष्मी चैंबर्स, २२ वार्डन रोड, मुंबई-४०००२६.
- ४९२३५२६, • सनस प्लाजा, शॉप ११-१३, १३०२, सुभाष नगर, पुणे-४११००२.
- ४८६१९०, • दिल्ली- २९११९८५, • पटना- ६७१४४२, • वाराणसी- ३५२३३१,
• बैंगलोर- २२१५३८९, • चेन्नई- ४९८२३१५, • कलकत्ता २४३४८७४
की मंगल कामनाओंसहित

दूहा धरम रा

सदाचार धारण करै, जद मन बस मँह होय।
ज्यूं प्रग्या मँह स्थित हुवै, जीवन मुक्ती होय॥

सदाचार अनुभव करै, अनुभव करै समाधि।
जद प्रग्या अनुभव करै, छूटै भव भय व्याधि॥

बिना स्वयं अनुभव कर्‌यां, करै बात ही बात।
संप्रदाय छायो रवै, उगै न धरम प्रभात॥

धारण कर्‌यां हि धरम है, अनुभव कर्‌यां हि ग्यान।
कोरी-मोरी मान्यता, करै नहीं कल्याण॥

विमल धरम धारण कर्‌यां, धरम सहायक होय।
देव ब्रह्म अर ईस सब, आपै रच्छक होय॥

मानव जीवन रतन सो, ब्रिथा न कर बरबाद।
ई जीवन ही चख सकै, सुद्ध धरम रो स्वाद॥

मेसर्स गो गो गारमेंट्स

३१ -४२, भांगवाड़ी शॉपिंग आर्केड,
१ला माला, कालबादेवी रोड, मुंबई - ४००००२.
०२२- २०५०४१४
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३, दूरभाष : (०२५५३) ८४०८६, ८४०७६.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, ६९- बी रोड, सातपुर, नाशिक-४२२००७. **बुद्धवर्ष २५४५, वैशाख पूर्णिमा, ७ मई, २००१**

वार्षिक शुल्क रु. २०/-, विदेश में US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. २५०/-, " US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. १९१५६**/७१. Regn. No. AR/NSK-46/2001,

Licenced to post **without Prepayment of postage** -- Licence number-- **AR/NSK-WP/3**
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२४०३
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
दूरभाष : (०२५५३) ८४०७६
फैक्स : (०२५५३) ८४१७६
Website: www.vri.dhamma.org
E-mail: <dhamma@vsnl.com>